''महिला श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन''

डॉ. संजय खरे
सह-प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

भारतीय परम्परागत समाज हमेशा से पितृसत्तात्मक मूल्यों पर आधारित है जिसके कारण महिलाओं की स्वतंत्राता हमेशा से अपवाद रही है। भारतीय समाज में आज भी महिलाओं को कार्य की प्रकृति पद के अधिकार एवं कर्त्तव्य तथा उनकी शारीरिक क्षमताओं के नाम पर हेय दृष्टि से देखा जाता है और हर क्षेत्र में उनका शोषण एक आम बात है। परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्य नियम और इसी कारण आज महिलाओं का घर की चाहर दिवारी से बाहर निकलकर कार्य क्षेत्रों में प्रवेश संभव हो पाया है। वर्तमान समय में बढ़ती हुई मंहगाई, परिवार की परवरिश एवं आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु महिलायें आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। फिर चाहे यह क्षेत्र सरकारी या फिर गैर सरकारी हो। श्रम का क्षेत्र सभी जगह महिलायें कार्य कर रही हैं। श्रम के क्षेत्र में संलग्न महिलायें विभिन्न क्षेत्रों में जैसे घरों में झाडू पौंछा, निर्माण क्षेत्रों में मजदूरी, कृषि क्षेत्रों में श्रमिक का कार्य कर रही हें। प्रायः यह देखा ही गया है कि श्रमिक महिलायें भी अपने मेहनत एवं परिश्रम के द्वारा सम्मानजनक आय अर्जित कर रही हैं, किन्तु उनकी पारिवारिक समस्यायें एवं अन्य कारणों के कारण महिला श्रमिक आज भी अपने आप को कहीं-कहीं बंधन में जकड़ा हुआ एवं सम्मानजनक सामाजिक जीवन स्तर पाने के लिये संघर्ष कर रही हैं।

मुख्य शब्द - महिला, संगठित, असंगठित क्षेत्र, मजदूरी, महिला सशक्तिकरण।

भारतीय परम्परागत समाज हमेशा से पितृसत्तात्मक मूल्यों पर आधारित रहा हैं। जिसके कारण महिलाओं की स्वतंत्राता हमेशा से अपवाद रही है, पारिवारिक आय वृद्धि एवं देश की प्रगति में महिलाओं का हमेशा से सहयोग अप्रत्यक्ष ही रहा है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद महिलाओं के विभिन्न व्यवसायों से जुड़ने में तीव्र वृद्धि हुई जिसमें भारत भी शामिल था। हालांकि पाश्चात्य देशों की तुलना मे यह प्रक्रिया यहाँ विलम्ब से प्रारंभ हुई। परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्य नियम है और इसी कारण आज महिलाओं का घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर कार्य क्षेत्रों मे प्रवेश सम्भव हो पाया है। वर्तमान समय मे बढ़ती हुई मंहगाई, बच्चों की अच्छी-सी-अच्छी परवरिश एवं आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु महिलायें आज पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है, एवं इस सबंध में महिला व पुरूष के बीच कोई अंतर प्रतीत नही होता है क्योंकि महत्व इस बात का नही है कि कौन कार्य कर रहा है अपितु महत्वपूर्ण यह है कि कौन कार्य को कैसा कर रहा है और इसी के आधार पर पुरूष व नारी के बीच भेद कर सकते है कि पुरूष जहाँ घर के बाहर शारीरिक व मानसिक श्रम करता है वही स्त्री घर मे रहकर परिवार संभालती है तथा समय

बचने पर घर मे एवं घर के बाहर कार्य करती है कभी-कभी उन्हें परिस्थितिवश भी कार्य करना पड़ता है जिसमें वह हल्का तो कभी पुरूष के समान भारी कार्य करती है, इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आज के समय में महिलायें धनोपार्जन हेतु सरकारी, गैर सरकारी,- नौकरी के साथ असंगठित क्षेत्रों मे भी कार्य कर रही है। असंगठित क्षेत्रा से तात्पर्य उस क्षेत्र से है जहाँ पर कार्य करने वाले व्यक्ति अपने समान हितों की रक्षा के लिये एकजुट नहीं है इनमे संगठनात्मक सहायता का अभाव पाया जाता है क्योंकि उन पर विभिन्न प्रकार के दबाव होते है जैसे रोजगार की अनियमितता, अज्ञानता, निरक्षरता आदि। असंगठित क्षेत्र मे श्रम कानूनों का अभाव पाया जाता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले कार्यो मे कृषि इकाईयों में मजदूरी, दुकानों पर कार्य, दूसरों के घरो मे काम करना, स्वयं का लघु उद्योग, सिलाई, बुनाई, के कार्यो मे, निमार्ण कार्यो मे संलग्न श्रमिक इत्यादि शामिल है।

वर्तमान समय मे अधिकांश महिलायें घर से बाहर निकलकर संगठित क्षेत्र/असंगठित क्षेत्र मे कार्य कर रही है। प्रायः यह देखा गया है कि आज महिलायें खुद को स्वावलम्बी, आर्थिक सुदृढ़ एवं परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत् है असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत् अधिकांश महिलायें कम शिक्षित एवं अपने अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ है जिसके कारण कार्य स्थलों में इनका शोषण एवं विभिन्न शासकीय योजनाओं के लाभ से वंचित होना पड़ रहा है। अपेक्षाकृत विभिन्न संगठित क्षेत्रों व सरकारी/गैर सरकारी विभागों मे कार्यरत् महिलाओं की स्थिति भिन्न है क्योंकि यह महिलायें ज्यादा शिक्षित एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य असंगठित क्षेत्रों मे कार्यरत् महिला श्रमिकों की पारिवारिक, सामाजिक आर्थिक स्थिति का मूल्याकंन करना है, कार्यक्षेत्रों मे उनको मिलने वाली सुविधायें उनके साथ कार्यरत पुरूष श्रमिकों का व्यवहार एवं श्रम के बदले प्राप्त होने वाले पारिश्रमिक का अध्ययन करना है।

शोध प्रारूप :

प्रस्तुत अध्ययन मे वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग करते हुये असंगठित क्षेत्रों मे कार्यरत महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के लिये सागर नगर स्थित काकागंज में झुग्गी वस्तियों मे रहने वाली महिलाओं मे से 30 महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श पद्धति द्वारा किया गया। इन चयनित महिलाओं मे घरों मे कार्य भवन निमार्ण के क्षेत्रा, मजदूरी, लघु उद्योगों मे कार्यरत महिलाओं को शामिल किया गया है। इन प्रतिदर्शो से तथ्य एकत्र करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन का प्रयोग किया गया है एवं द्वितीयक तथ्यों के संग्रहण हेतु पत्रा पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य :

1. महिला श्रमिकों की पारिवारिक सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. महिला श्रमिकों की समस्याओं का अध्ययन।
3. महिला श्रमिकों को मिलने वाली विभिन्न सरकारी योजनाओं का अध्ययन।
4. अध्ययन कार्यस्थल में महिला श्रमिकों की स्थिति का अध्ययन।

शोध का महत्व :

प्रस्तुत शोध न केवल महिला श्रमिकों की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति जानने के लिए किया गया है अपितु इसके द्वारा यह जानने का प्रयास भी किया गया है कि कार्य स्थल में महिला श्रमिकों के साथ कैसा व्यवहार

किया जाता है। श्रम के बदले मिलने वाले पारिश्रमिक में महिला एवं पुरूष में क्या कोई भेदभाव तो नहीं किया जाता है एवं साथ ही यह भी अध्ययन में ज्ञात किया जाएगा कि महिलाओं को विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है अथवा नही।

तालिका क्र. 01

महिला श्रमिकों के परिवार का प्रकार

परिवार का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	18	60
एकाकी परिवार	12	40
कुल योग	30	100

तालिका क्र. 01 के अन्तर्गत महिला श्रमिकों से पूछा गया कि उनके परिवार का स्वरूप क्या है। इस संबंध में 18 निदर्श का कहना है कि वह संयुक्त परिवार में निवास कर रही है, जहाँ उनके साथ सास-ससुर, देवर-जेठानी एवं अन्य सदस्य साथ में निवासरत है। वही 12 महिला श्रमिक एकाकी परिवार में निवास कर रही हैं। दोनों प्रकार के परिवारों में रहने वाली महिलाओं की स्थिति में भी अन्तर दृष्टिगत हुआ है।

तालिका क्र. 02

महिला श्रमिकों की मासिक आय

प्रति माह	संख्या	प्रतिशत
1000-5000	01	3.3
6000-10000	03	10
11000-15000	08	26.6
16000-20000	13	43
20000 से ज्यादा	05	16
योग	**30**	**100**

उपरोक्त तालिका में निर्देश से पूछा गया कि उनको प्रति माह कितनी आय होती है। उक्त प्रश्न में मात्रा 01 महिला श्रमिक का कहना है कि वह प्रति माह 5000 रू. कमाती है क्योकि वर्तमान में पारिवारिक जिम्मेदारी ज्यादा होने के कारण अधिक कार्य नहीं कर रही है। 03 महिला श्रमिकों की आमदनी 6000 रू. से लेकर 10,000/- प्रति माह है। 08 महिला श्रमिक प्रति माह 10,000 से लेकर 15000 रू. तक आय अर्जित कर लेती है। वही सर्वाधिक 13 महिला श्रमिकों का कहना है कि हम लोग 15 से लेकर 20,000 रू तक प्रति माह आय अर्जित करते है। 05 महिला श्रमिक प्रति माह 20,000 रू से ज्यादा का कार्य कर लेती है यह वह महिला श्रमिक है जो कई घरों में कार्य कर रही है।

तालिका क्र. 03

महिला श्रमिकों की समस्याओं का अध्ययन

क्र. समस्याओं का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
1. पुरूष सदस्यों में मद्यपान की लत	07	23
2. कार्य क्षेत्रा में आर्थिक शोषण	05	16
3. कार्य क्षेत्रा में झगड़े का माहौल एवं	10	33.3
कार्य स्थल में अपमान		
4. परिवार के सदस्यों का असहयोग	05	16.6
5. उपरोक्त सभी	03	10
योग	30	100

प्रस्तुत तालिका में महिला श्रमिकों से पूछा गया कि उनके सामने क्या-क्या समस्यायें है इस प्रश्न के प्रति उत्तर में 07 महिलाओं का कहना है कि उनके प्रति मद्यपान का सेवन करते है जिसकें कारण प्रतिदिन पारिवारिक झगड़े होते है। 05 महिला श्रमिकों का कहना है कि निर्माण क्षेत्रा में मजदूरी में उनके एवं पुरूष श्रमिकों के बीच मजदूरी में अंतर रखा जाता है जबकि किये जाने वाला कार्य लगभग समान होता है। वही 10 महिला श्रमिकों का कहना है कि कार्य क्षेत्रा में होने वाले झगड़े से भी उनकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसके साथ अपमान भी झेलना पड़ता है।

05 महिला श्रमिकों का कहना है कि उनके साथ उनके परिवार के सदस्य सहयोग नहीं करते है जिसके कारण उन्हें वाहर काम करने के साथ घर के कार्यों में परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग न मिलने के कारण दोहरी जिम्मेदारियों का निर्वाहन करना पड़ता है। 03 महिलाओं ने स्वीकार्य किया है कि उपरोक्त सभी समस्याओं से उन्हें प्रतिदिन सामना करना पड़ता है।

तालिका क्र. 4

"महिला श्रमिकों को विभिन्न शासकीय सुविधाओं की जानकारी" के संबंध में

क्र.	विभिन्न शासकीय सुविधाओं की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
1	जानकारी है	09	30
2	जानकारी नहीं है	21	70
	योग	30	100

वर्तमान समय में महिला श्रमिकों के कल्याण हेतु सरकार द्वारा निर्माण क्षेत्र, घरों में कार्यरत महिला श्रमिकों एवं स्वयं का व्यवसाय करने वाली महिला श्रमिकों हेतु अनेकों योजनायें संचालित कर की जा रहीं है। किंतु अज्ञानता, अशिक्षा, जागरूकता की कमी, ठेकेदारों की चालाकी आदि के कारण 21 महिला श्रमिक सरकारी योजनाओं से अनभिज्ञ है, वहीं मात्रा 09 महिला श्रमिक सरकारी योजनाओं से समझ रखते हुये लाभांवित हो रहीं है।

तालिका क्र. 5

"घर के बाहर निकलने एवं कार्य (श्रम) करने के द्वारा क्या महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ हैं"

क्र.	उत्तर	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	25	83
2	नहीं	05	17
	योग	**30**	**100**

उपरोक्त तालिका महिलाओं के सशक्तिकरण को प्रदर्शित करती है। सर्वाधिक 25 महिला श्रमिक का मानना है कि घर के बाहर निकलने के कारण उनका सशक्तिकरण हुआ है वे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक रूप से सशक्त हुई है। शेष 05 महिलाओं ने ऐसा नहीं माना है।

वर्तमान में महिलायें अवसर प्राप्त करके आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि प्रत्येक क्षेत्रों में अपनी योग्यतानुसार सहयोग देने के लिये अग्रसर है विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में।

निष्कर्ष :

वर्तमान समय में महिलाओं को समाज में विशेष स्थान प्राप्त है महिलायें धनोपार्जन कर समाज को सुदृढ़ एवं आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाने में प्रयत्नशील है। महिलायें आज चहार दिवारी के बाहर कार्य करके एक सम्मानजनक आय अर्जित कर रहीं है। यदि हम महिला श्रमिकों की बात करें तो प्रस्तुत शोध अध्ययन में दृष्टिगत हुआ कि महिला श्रमिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है एवं इसकी मुख्य वजह उनका अशिक्षित होना, अपने अधिकारों के प्रति अनिभिज्ञता, अधिकांश महिला श्रमिकों के पति बेरोजगार है एवं व्यसनों में लिप्त है जिसके कारण महिलायें परिवार में मानसिक दुर्बलता का शिकार हो रहीं है।

अंतिम निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि आज महिलायें अपने श्रम के द्वारा दूसरे के घरों में झाडू-पोंछा का कार्य, निर्माण क्षेत्र में मजदूरी का कार्य अथवा स्वयं का व्यवसाय कर रहीं है उससे उनकी आर्थिक स्थिति में, सामाजिक स्थिति में वृद्धि हुई है साथ ही साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन एवं पारिवारिक आवश्यकताओं को भी अच्छे से पूर्ण कर रहीं है जो कि महिला सशक्तिकरण का ठोस प्रमाण है।

संदर्भ :

1. मिश्रा नमिता - ''असंगठित क्षेत्रा में कार्यरत ग्रमीण महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति'' राधा कमल मुखर्जी चिंतन परम्परा, 2018
2. महिला सशक्तिकरण - मनु ज्ञानकोश विकिपीडिया
3. जोशी सरस्वती एवं रेनु प्रकाश-''जनजातीय महिलाएं और असंगठित क्षेत्रा, .राधा कमल मुखर्जी चिंतन परम्परा, 2016
4. अग्रवाल अमित-''भारत में ग्रामीण समाज'', विवेक प्रकाशन, दिल्ली 2001
5. राजकुमार-''महिला एवं विकास'' अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2009

❖ ❖ ❖